CHILDREN'S BOOK TRUST NEW DELHI
महागिरि

महागिरि

पुनर्कथन : हेमलता
चित्रकार : पुलक बिस्वास

महागिरि एक बहुत बड़ा हाथी था। वह इतना बड़ा था कि बच्चों को उसके पास जाते भी डर लगता था।
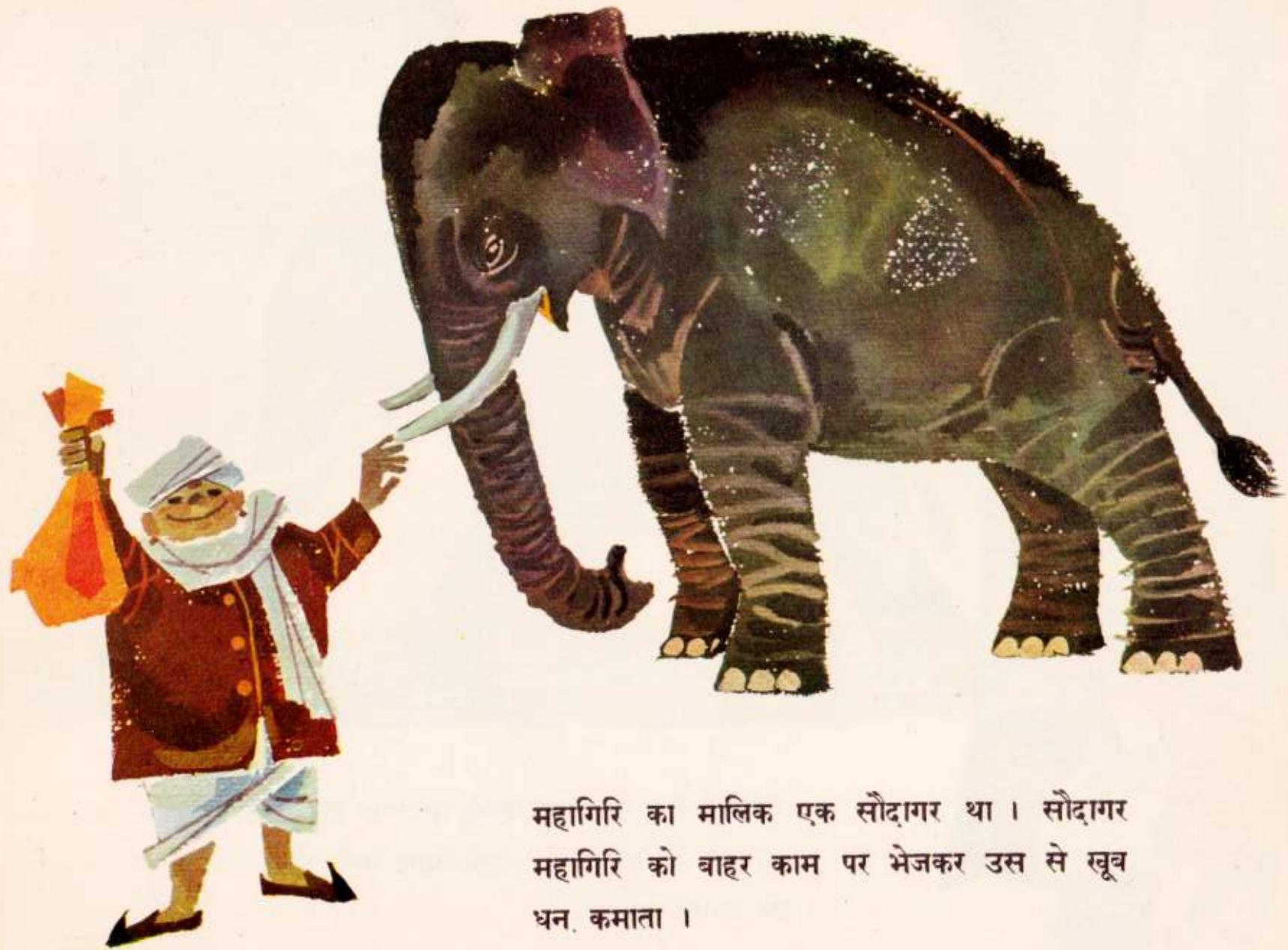
महागिरि का मालिक एक सौदागर था। सौदागर महागिरि को बाहर काम पर भेजकर उस से खूब धन कमाता।
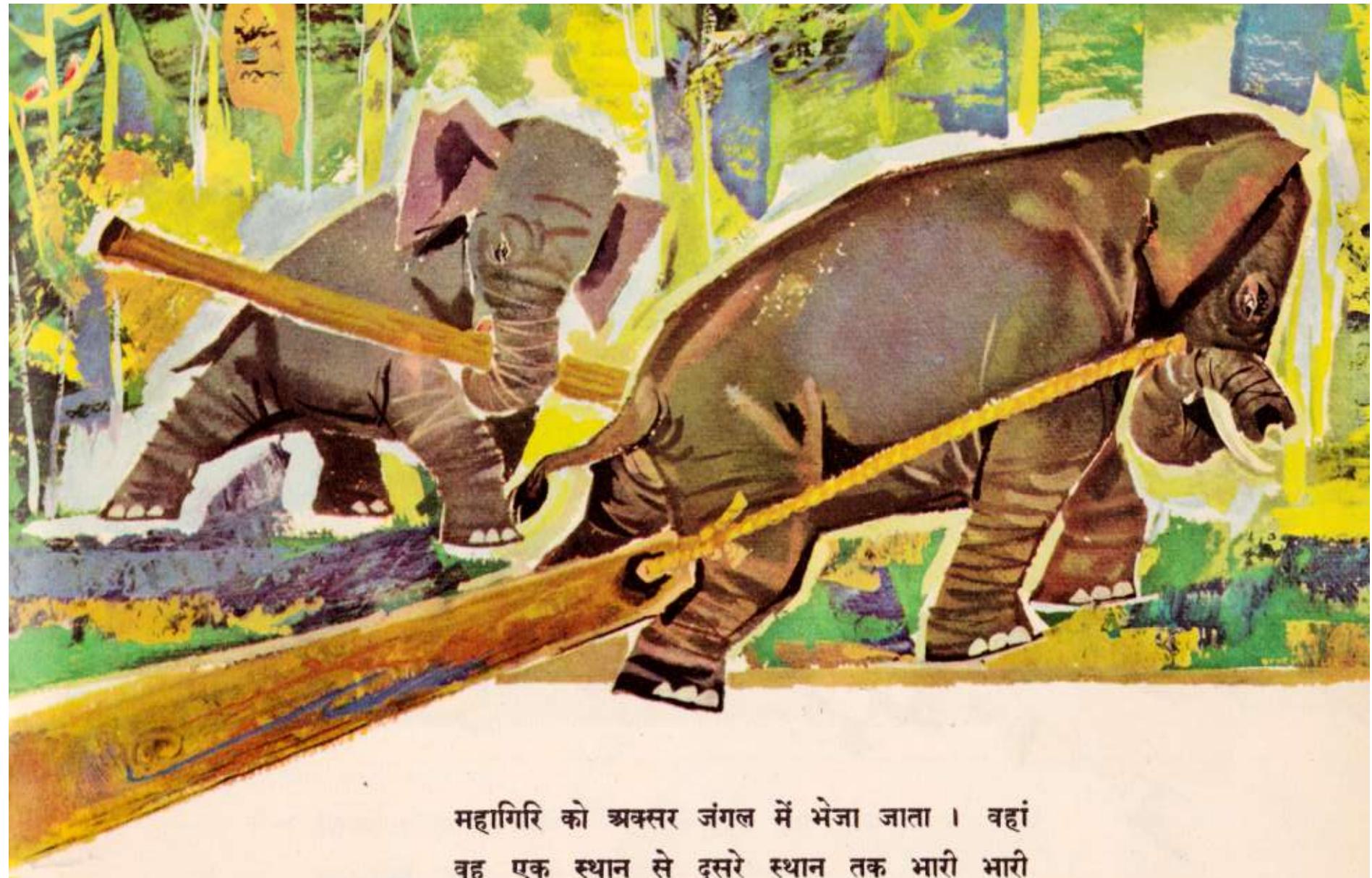
महागिरि को अक्सर जंगल में भेजा जाता। वहां वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक भारी भारी लट्ठे ढोता।

कभी वह शादी-ब्याह में भेजा जाता। बारात में वह दूल्हे की सवारी के काम आता और उसे दुलहिन के घर ले जाता।

जब कभी मन्दिर में कोई बड़ा उत्सव होता तो महागिरि को भेजा जाता। उत्सव के जुलूस में वह सब से आगे चलता।
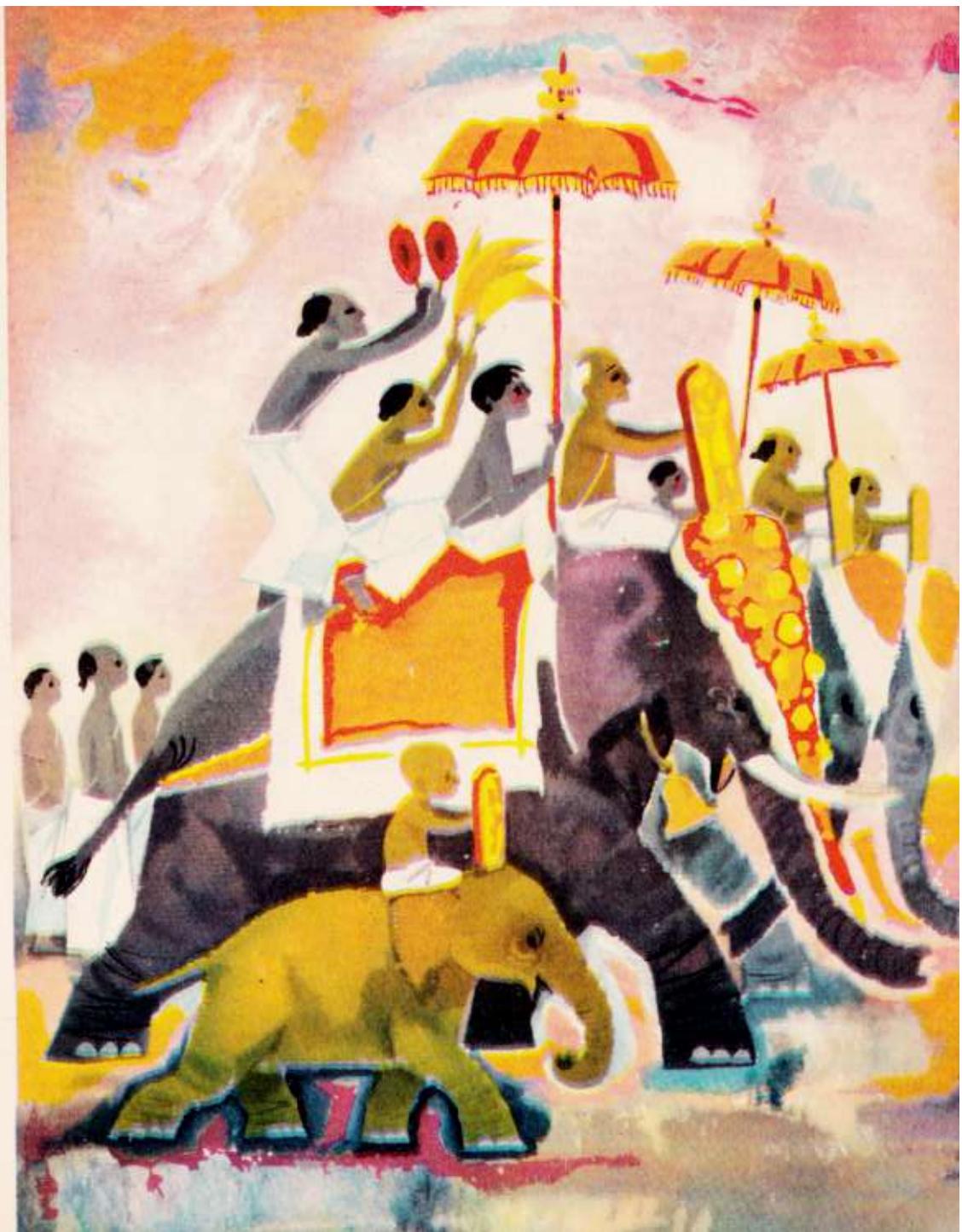
एक बार गाँववाले मन्दिर में कोई उत्सव करना चाहते थे। उत्सव शुरू करने के पहले झंडा फहराना जरूरी था। मन्दिर में झंडा तो था, लेकिन उसको फहराने के लिए बाँस नहीं था।

गाँव के लोग पास के जंगल में गए। वहाँ उन्होंने एक बड़ा सा साल का पेड़ काट गिराया।
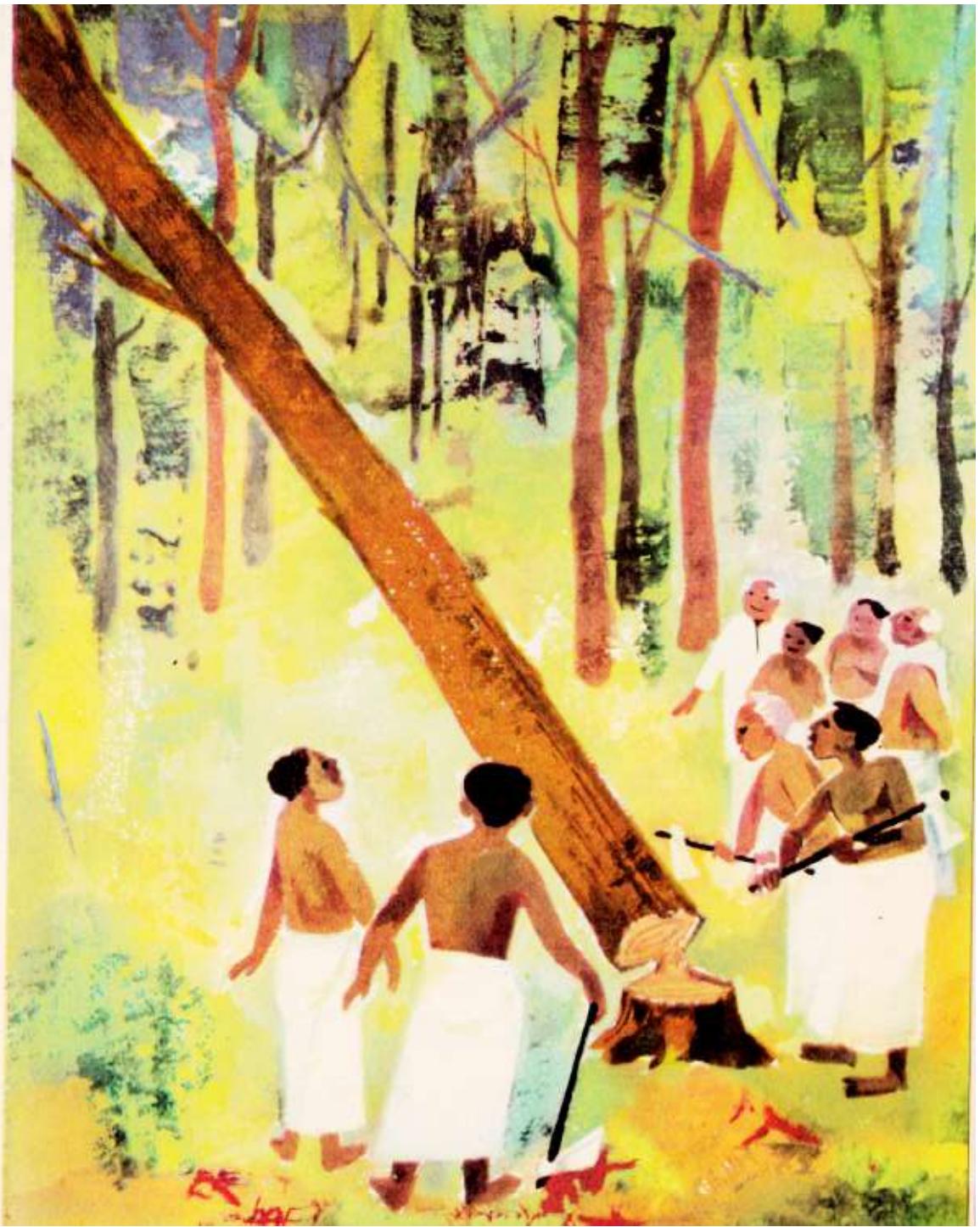
उन्होंने पेड़ के तने से एक सुन्दर खंभा बनाया ।

खंभा बहुत लम्बा और भारी था । गाँववाले उस को उठा नहीं सकते थे, सो उस को उठा कर मन्दिर तक ले जाने के लिए महागिरि को बुलाया गया ।
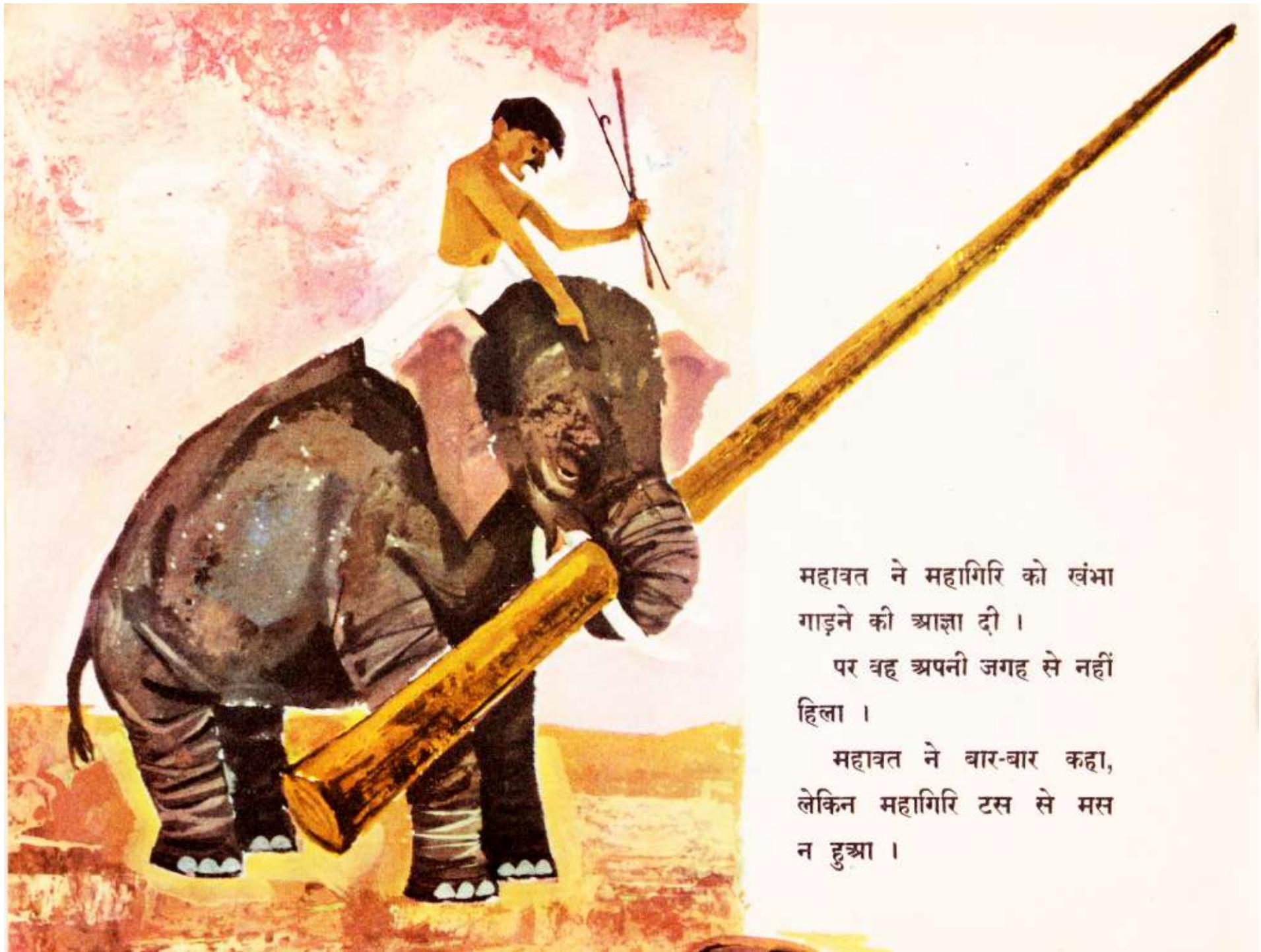
महावत ने महागिरि को खंभा गाड़ने की आज्ञा दी ।

पर वह अपनी जगह से नहीं हिला ।

महावत ने बार-बार कहा, लेकिन महागिरि टस से मस न हुआ ।

महावत ने एक मोटे डंडे से महागिरि को पीटना शुरू किया। इतना पीटा, इतना पीटा कि डंडा टूट गया।

लेकिन महागिरि चुपचाप खड़ा मार खाता रहा।
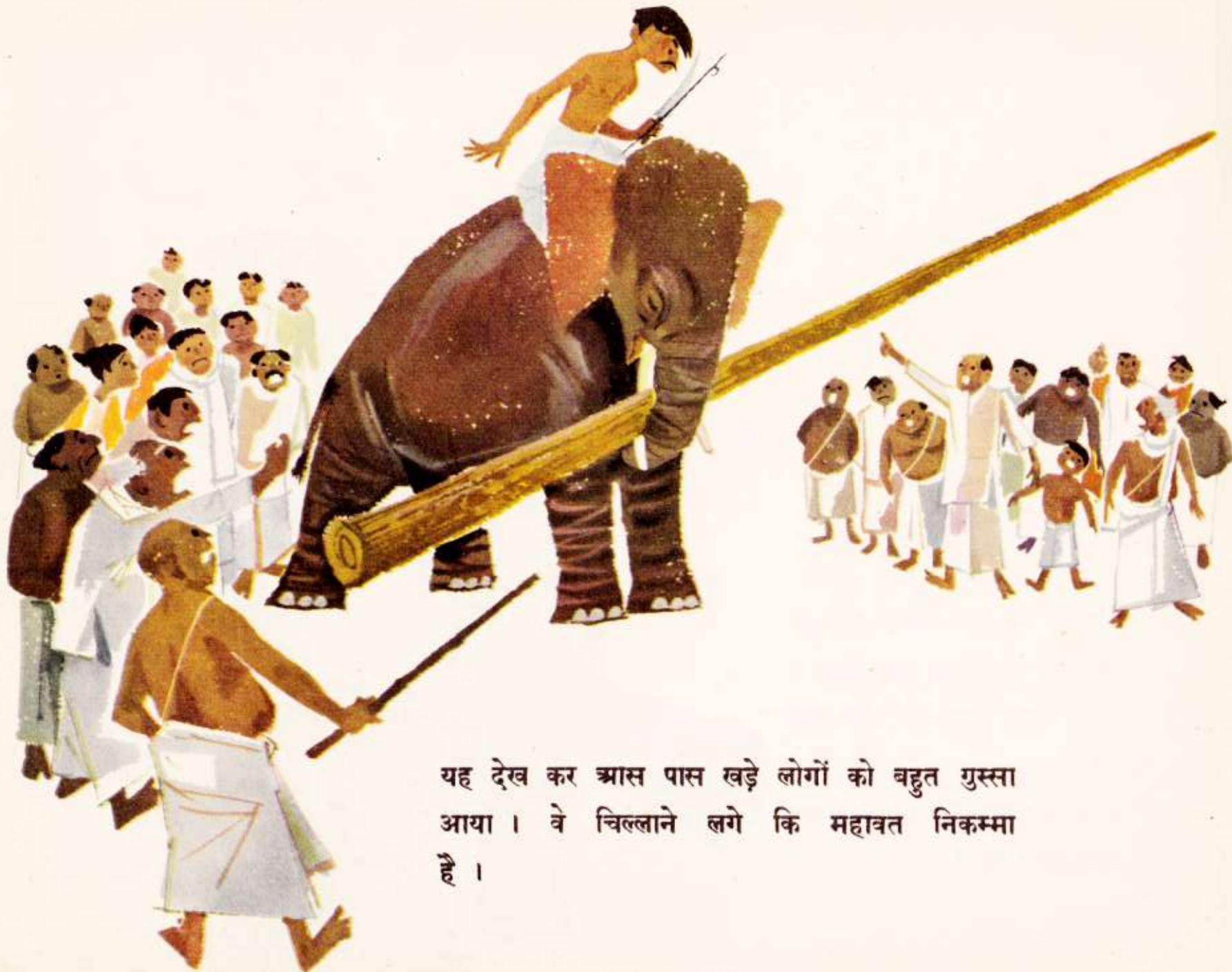
यह देख कर आस पास खड़े लोगों को बहुत गुस्सा आया । वे चिल्लाने लगे कि महावत निकम्मा है ।

लोगों की बात सुन कर महावत को बहुत बुरा लगा। उसने अपना तेज़ छुरा निकाला। वह महागिरि की गर्दन में छुरा चुभा कर बोला, "अब भी मेरा कहना मानेगा या नहीं ?"

महागिरि और नहीं सह सका।

उसको गुस्सा आया। उसने खंभे को नीचे फेंक दिया।

महागिरि ज़ोर से चिंघाड़ा और फिर वह इस तरह ज़ोर से हिलने लगा कि महावत धड़ाम से नीचे आ गिरा। लोगों ने सोचा महागिरि पागल हो गया है। इस विचार से सब लोग घबरा गए और डर कर जान बचा कर भागे।
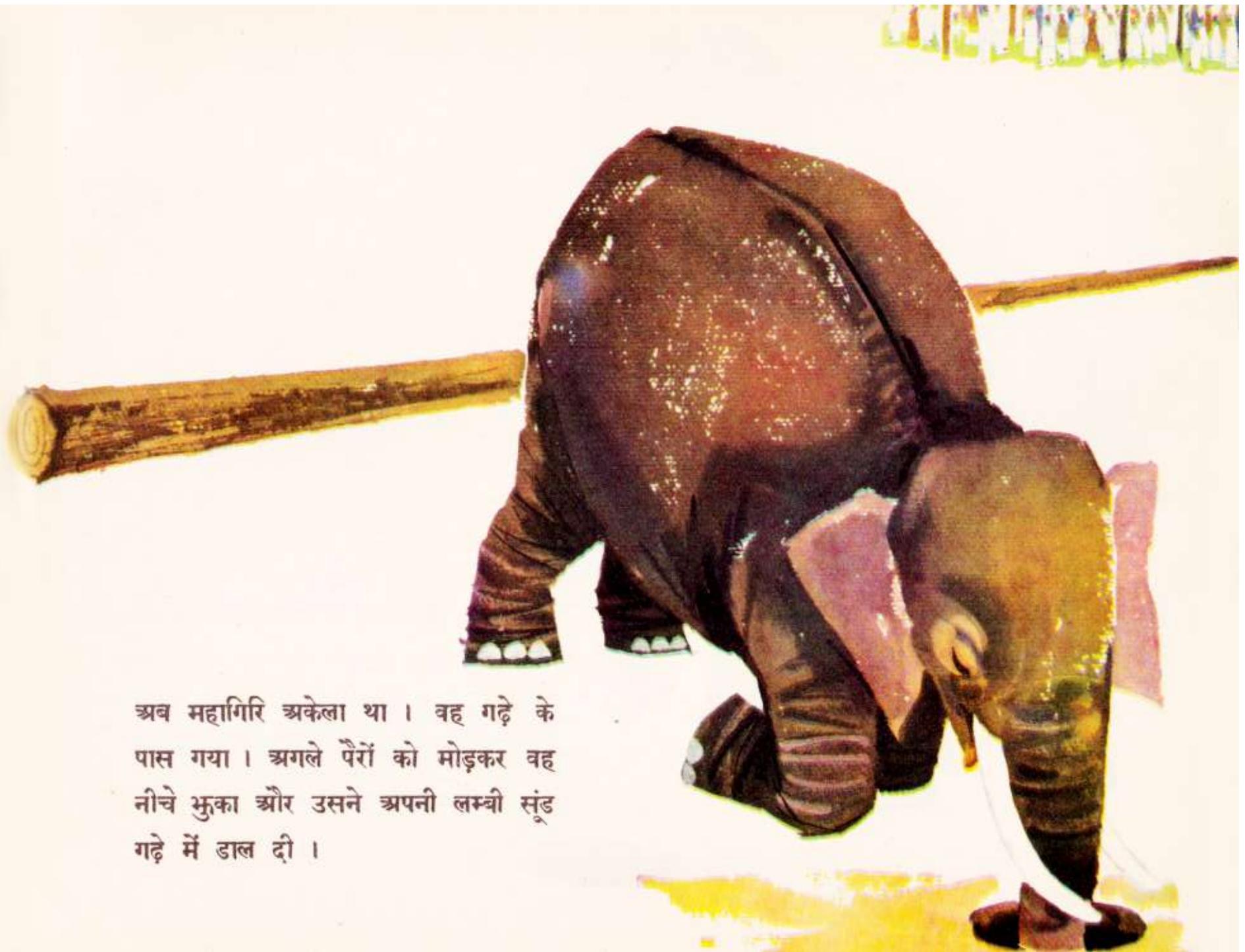
अब महागिरि अकेला था। वह गढ़े के पास गया। अगले पैरों को मोड़कर वह नीचे झुका और उसने अपनी लम्बी सूंड गढ़े में डाल दी।
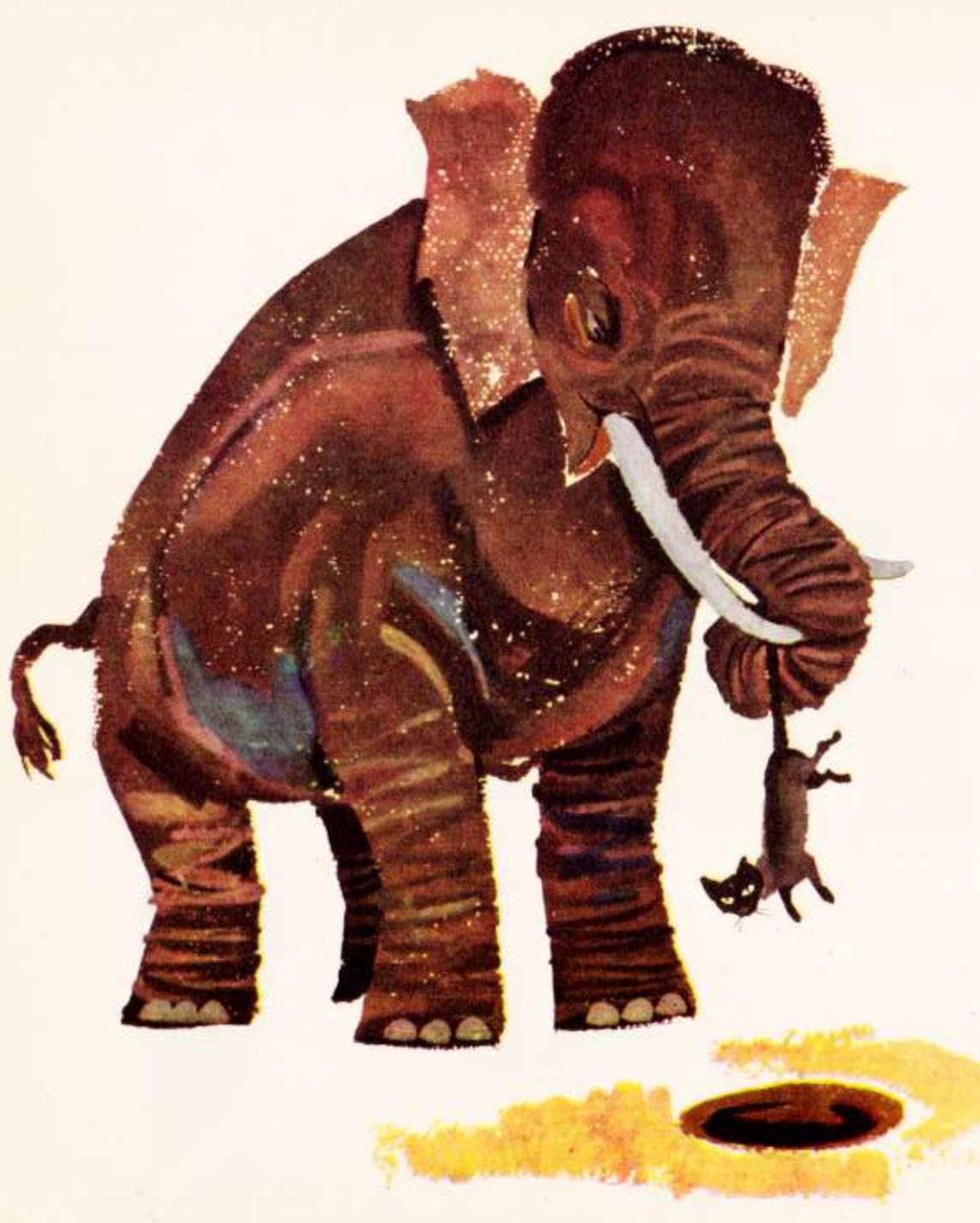
उसने गढ़े से कोई चीज़ निकाली और उसको धीरे से धरती पर रख दिया। वह थी एक नन्हीं सी बिल्ली। बेचारी उस गढ़े में दुबकी हुई थी।

लोग दूर खड़े महागिरि को देख रहे थे। वे अब खुश खुश दौड़े आए। उन्होंने आकर महागिरि को घेर लिया। अब वे जान गए थे कि महागिरि महावत का कहना क्यों नही मान रहा था। वह बड़ा हाथी उस नन्हीं बिल्ली को चोट नही पहुँचाना चाहता था।

उसके बाद महागिरि ने लकड़ी के खंभे को उठाया और उसको संभाल कर गढ़े में उतारा। वह खंभे को अपनी सूँड से सीधा पकड़े खड़ा रहा, जिससे लोग उसके चारों ओर मिट्टी भर दें।
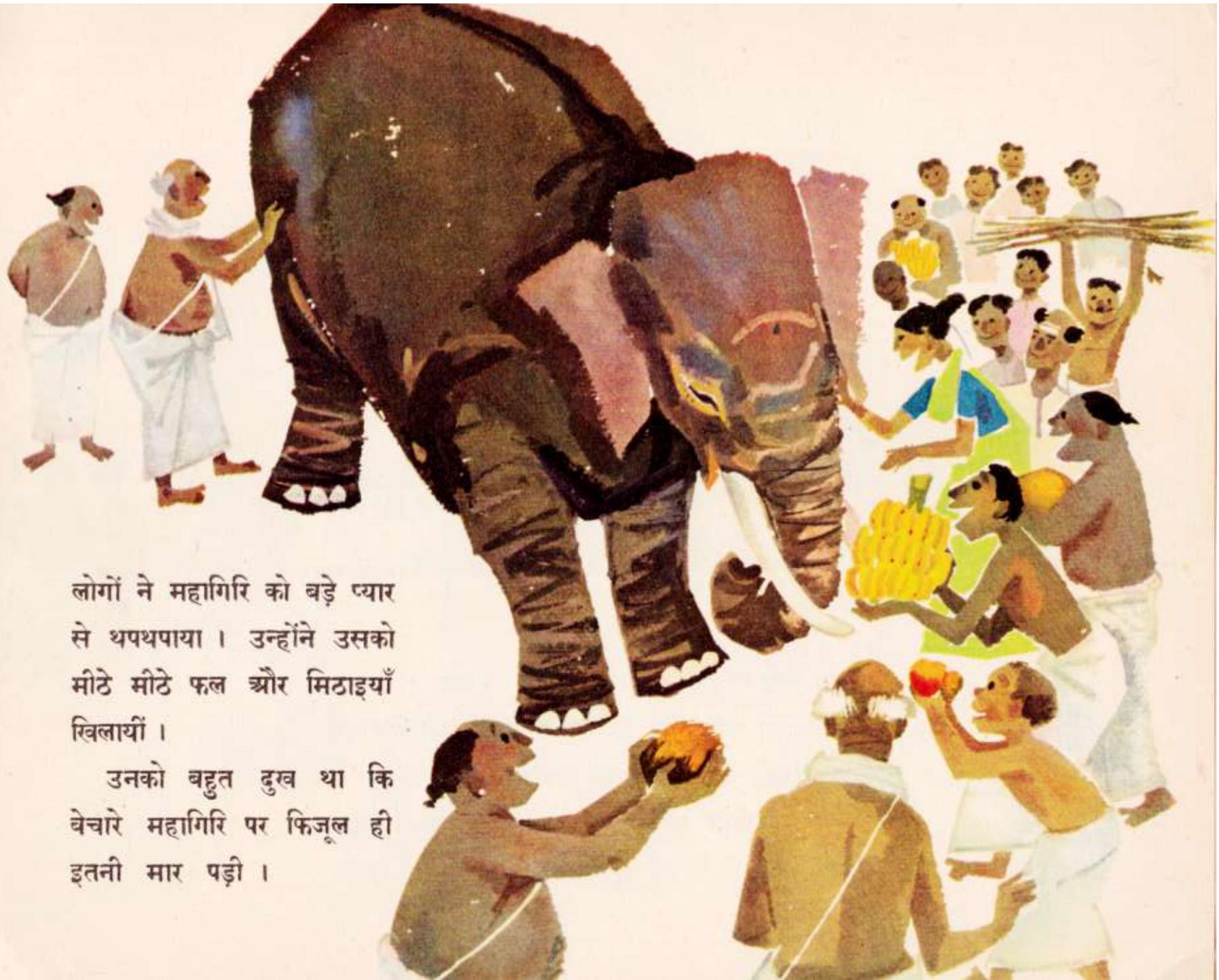
लोगों ने महागिरि को बड़े प्यार से थपथपाया। उन्होंने उसको मीठे मीठे फल और मिठाइयाँ खिलायीं।

उनको बहुत दुख था कि बेचारे महागिरि पर फिजूल ही इतनी मार पड़ी।

उस दिन से महागिरि सारे गाँव का दुलारा हो गया। बच्चे उसे बहुत प्यार करते और कभी कभी सौदागर बच्चों को उस पर मुफ्त सवारी भी करने देता। बच्चे महागिरि पर सवार होते और उस से बहुत खुश रहते।